रविवार 8 मार्च, 2026

विषय — आदमी

स्वर्ण पाठ: 1 यूहन्ना 3: 2

"हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 103: 1, 3, 4, 13, 15-18, 20

1 हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,
13 जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।
15 मनुष्य की आयु घास के समान होती है, वह मैदान के फूल की नाईं फूलता है,
16 जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता, और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है।
17 परन्तु यहोवा की करूणा उसके डरवैयों पर युग युग, और उसका धर्म उनके नाती- पोतों पर भी प्रगट होता रहता है,
18 अर्थात उन पर जो उसकी वाचा का पालन करते और उसके उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलते हैं॥
20 हे यहोवा के दूतों, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसको पूरा करते हो उसको धन्य कहो!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. प्रेरितों के काम 6: 8, 9 (से *1st*,), 10-13 (से *1st*,)

8 स्तिुफनुस अनुग्रह और सामर्थ में परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े बड़े अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।
9 तब उस अराधनालय में से
10 परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिस से वह बातें करता था, वे साम्हना न कर सके।
11 इस पर उन्होने कई लोगों को उभारा जो कहने लगे, कि हम ने इस को मूसा और परमेश्वर के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है।
12 और लोगों और प्राचीनोंऔर शास्त्रियों को भड़काकर चढ़ आए और उसे पकड़कर महासभा में ले आए।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

13 और झूठे गवाह खड़े किए,

2. प्रेरितों के काम 7: 2 (से *6th*,), 48, 49 (से *2nd* :), 52-57 (से *1st*,), 59 (से *1st*,), 60

2 उस ने कहा; हे भाइयो, और पितरो सुनो, हमारा पिता इब्राहीम हारान में बसने से पहिले जब मिसुपुतामिया में था; तो तेजोमय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया।
48 परन्तु परमप्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा।
49 कि प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिहांसन और पृथ्वी मेरे पांवों तले की पीढ़ी है, मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर बनाओगे और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा
52 भविष्यद्वक्ताओं में से किस को तुम्हारे बाप दादों ने नहीं सताया, और उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देने वालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वाने वाले और मार डालने वाले हुए।
53 तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया॥
54 ये बातें सुनकर वे जल गए और उस पर दांत पीसने लगे।
55 परन्तु उस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा देखकर।
56 कहा; देखों, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूं।
57 तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए,
59 और वे स्तिुफनुस को पत्थरवाह करते रहे,
60 फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा, और यह कहकर सो गया: और शाऊल उसके बध में सहमत था॥

3. प्रेरितों के काम 8: 1 (से.), 2

1 और शाऊल उसकी मौत के लिए राज़ी था।
2 और भक्तों ने स्तिुफनुस को कब्र में रखा; और उसके लिये बड़ा विलाप किया।

4. प्रेरितों के काम 9: 1 (से *1st*,), 2 (इच्छित)-5 (से:), 6, 8, 10 (से *1st*.), 11 (उठना), 17, 18, 20

1 और शाऊल
2 ... और उस से दमिश्क की अराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी, कि क्या पुरूष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बान्ध कर यरूशलेम में ले आए।
3 परन्तु चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी।
4 और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?
5 उस ने पूछा; हे प्रभु, तू कौन है? उस ने कहा; मैं यीशु हूं; जिसे तू सताता है।
6 परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो कुछ करना है, वह तुझ से कहा जाएगा।

8 तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आंखे खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़के दमिश्क में ले गए।
10 दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उस से प्रभु ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह! उस ने कहा; हां प्रभु।
11 तब प्रभु ने उस से कहा, उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है।
17 तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात यीशु, जो उस रास्ते में, जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।
18 और तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया; फिर भोजन कर के बल पाया॥
20 और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

5. प्रेरितों के काम 14: 2, 19, 20

2 परन्तु न मानने वाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में उकसाए, और बिगाड़ कर दिए।
19 परन्तु कितने यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलुस को पत्थरवाह किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए।
20 पर जब चेले उस की चारों ओर आ खड़े हुए, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे को चला गया।

6. प्रेरितों के काम 20: 7-12

7 सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।
8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत दीये जल रहे थे।
9 और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।
10 परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।
11 और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह चला गया।
12 और वे उस लड़के को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई॥

7. रोमियो 8: 2, 9 (तु) (से.), 12 (से *3rd*,), 14, 16, 17 (से *2nd* ;), 38, 39

2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।

9 परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।
12 सो हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें।
14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।
16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।
17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं॥
38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई,
39 न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. **115: 13-16**

भगवान: ईश्वरीय सिद्धांत, जीवन, सत्य, प्रेम, आत्मा, रूह, मन।

मनुष्य: भगवान का आध्यात्मिक विचार, अलग, परिपूर्ण, हमेशा रहने वाला।

2. **332: 4 (पापा मा)-8**

पिता-माता देवता का नाम है, जो उनकी आध्यात्मिक रचना के उनके कोमल संबंधों को इंगित करता है। जैसा कि प्रेरित ने इसे उन शब्दों में व्यक्त किया है जो उसने एक क्लासिक कवि से मंजूर होने के साथ उद्धृत किए थे: "क्योंकि हम भी उसकी संतान हैं।"

3. **264: 32-15**

आत्मा का ब्रह्माण्ड आध्यात्मिक प्राणियों से भरा हुआ है, और इसका शासन दिव्य विज्ञान है। मनुष्य निम्नतम नहीं, अपितु उच्चतम मानसिक गुणों की संतान है। मनुष्य आध्यात्मिक अस्तित्व को उसी अनुपात में समझता है जैसा कि सत्य और प्रेम के खजाने हैं। मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बढ़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

4. **37: 5 (इतिहास)-12**

इतिहास दुख-तकलीफों के रिकॉर्ड से भरा है। "शहीदों का खून चर्च का बीज है।" इंसान सच को स्टील या खंभे से मारने की बेकार कोशिश करते हैं, लेकिन गलती सिर्फ़ आत्मा की तलवार के सामने ही हारती है। शहीद वो इंसानी कड़ी हैं जो धर्म के इतिहास में एक स्टेज को दूसरे स्टेज से जोड़ते हैं। वे धरती के प्रकाशमान लोग हैं, जो दुनियावी एहसास के माहौल को साफ़ और दुर्लभ बनाने और इंसानियत में शुद्ध आदर्श भरने का काम करते हैं।

5. 388: 1-4

ईसाई शहीद क्रिश्चियन साइंस के पैगंबर थे। दिव्य सत्य की उत्थान और अभिषेक शक्ति के माध्यम से, उन्होंने भौतिक इंद्रियों पर विजय प्राप्त की, एक ऐसी जीत जिसे केवल विज्ञान ही समझा सकता है।

6. 326: 23-32

टार्सस के शाऊल ने मसीह, मार्ग या सत्य को देखा - केवल तभी जब उसके अधिकार की अनिश्चित भावना एक आध्यात्मिक अर्थ के लिए झुकी, जो हमेशा सही होती है। फिर वह आदमी बदल गया। विचार ने एक महान दृष्टिकोण ग्रहण किया, और उसका जीवन अधिक आध्यात्मिक हो गया। जिन ईसाइयों का धर्म वह नहीं समझते थे, उन्हें सताने में उन्होंने जो गलत काम किया है, उसे वह समझ गया और नम्रता से उसे पॉल का नया नाम मिला। उन्होंने पहली बार प्रेम के सच्चे विचार को देखा, और दिव्य विज्ञान का पाठ सीखा।

7. 275: 25-4

हमारे भौतिक मानव सिद्धांत विज्ञान से वंचित हैं। ईश्वर की सच्ची समझ आध्यात्मिक है। यह जीत की कब्र लूटता है. यह उन झूठे सबूतों को नष्ट कर देता है जो विचारों को गुमराह करते हैं और अन्य देवताओं, या अन्य तथाकथित शक्तियों, जैसे पदार्थ, बीमारी, पाप और मृत्यु की ओर इशारा करते हैं, जो एक आत्मा से श्रेष्ठ या विपरीत हैं।

सत्य, आध्यात्मिक रूप से समझे जाने पर, वैज्ञानिक रूप से समझा जाता है। यह ग़लती दूर करता है और बीमारों को चंगा करता है।

एक ईश्वर, एक मन, उस शक्ति को प्रकट करता है जो बीमारों को चंगा करती है, और पवित्रशास्त्र की इन बातों को पूरा करती है, "मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं," तथा "मुझे छुड़ौती मिली है।"

8. 166: 3 (जैसा)-7

जैसा आदमी सोचता है, वैसा ही वह है। मन वह सब है जो महसूस करता है, कार्य करता है, या कार्रवाई को बाधित करता है। इससे अनभिज्ञ या अपनी निहित जिम्मेदारी से हटने के लिए, उपचार का प्रयास गलत पक्ष पर किया जाता है, और इस प्रकार शरीर पर सचेत नियंत्रण खो जाता है।

9. 534: 18-23

रोमियों को लिखी अपनी पत्री में पौलुस कहता है: "क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है। और जो शारीरिक दशा में है, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं।"

10. 315: 16-20

भगवान की समानता जिससे हम पाप के माध्यम से दृष्टि खो देते हैं, जो सत्य के आध्यात्मिक अर्थ को उद्घाटित करता है; और हम इस समानता का एहसास तभी करते हैं जब हम पाप को कम करते हैं और मनुष्य की विरासत को साबित करते हैं, भगवान के बेटों की स्वतंत्रता।

11. 477: 6-8

मनुष्य आत्मा के लिए भौतिक आवास नहीं है; वह स्वयं आध्यात्मिक है। प्राण आत्मा होने के कारण न तो अपूर्ण है और न ही भौतिक।

12. 393: 4-15

ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर स्व-अभिनय कर रहा है, केवल इसलिए क्योंकि नश्वर मन स्वयं से, अपने कार्यों से और उनके परिणामों से अनभिज्ञ है, - इस बात से अनभिज्ञ है कि सभी बुरे प्रभावों का पूर्वगामी, दूरस्थ और रोमांचक कारण तथाकथित का कानून है नश्वर मन, पदार्थ का नहीं। मन शारीरिक इंद्रियों का स्वामी है, और बीमारी, पाप और मृत्यु को जीत सकता है। इस ईश्वर प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करें। अपने शरीर पर अधिकार कर लो, और उसकी भावना और कार्य को नियंत्रित करो। आत्मा के सामर्थ्य में वृद्धि का विरोध करना अच्छा है। ईश्वर ने मनुष्य को इसके लिए सक्षम बनाया है, और कुछ भी मनुष्य में दिव्य रूप से दी गई क्षमता और शक्ति को नष्ट नहीं कर सकता है।

13. 245: 32 (यह)-16

अनंत न कभी शुरू हुआ और न कभी खत्म होगा। मन और उसके स्वरूपों का सत्यानाश कभी नहीं हो सकता। मनुष्य एक पेंडुलम नहीं है, जो बुराई और भलाई, खुशी और दुःख, बीमारी और स्वास्थ्य, जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा है। जीवन और उसके संकायों को कैलेंडरों द्वारा मापा नहीं जाता है। सही और अमर उनके निर्माता की शाश्वत समानता है। मनुष्य किसी भी तरह से अपूर्णता से उठने वाले पदार्थ के कीटाणु से नहीं है और आत्मा को उसके मूल से ऊपर पहुंचाने का प्रयास कर रहा है। धारा अपने स्रोत से ऊपर नहीं उठती है।

सौर वर्षों से जीवन का माप युवाओं को लूटता है और उम्र के लिए कुरूपता देता है। पुण्य का उज्ज्वल सूर्य और होने के साथ सत्य सह-अस्तित्व। घटता हुआ सूरज उसकी शाश्वत दोपहर है, जो एक गिरते सूरज से अनिच्छुक है। भौतिक और भौतिक के रूप में, सौंदर्य की क्षणिक भावना फीकी पड़ जाती है, आत्मा की चमक उज्ज्वल और अपूर्ण चमक के साथ उत्कीर्ण भावना पर भोर होनी चाहिए।

14. 516: 9 (ईश्वर)-12, 19-23

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

ईश्वर सभी चीजों का, उसकी अपनी समानता पर पक्षपात करता है। जीवन अस्तित्व में परिलक्षित होता है, सत्यता में सत्य, अच्छाई में ईश्वर, जो अपनी शांति और स्थायित्व प्रदान करता है।

मनुष्य, उसकी समानता में बना, उसके पास सभी पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रभुत्व को दर्शाता है। भगवान के साथ सहवास और शाश्वत के रूप में आदमी और औरत हमेशा के लिए, अनंत पिता-माता भगवान की महिमा में परिलक्षित होते हैं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के

लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6